[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4961 **H**

Unique Paper Code : 2052201201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunikkal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) सांई सूं सब होत है, बंदे थैं कछु नाहिं ।

राई थैं परबत करै, परबत राई मांहि

माला पहरयां कुछ नहीं, गांठि हिरदा की खोई

हरि चरनूं चित्त राखिये, तौ अमरापुर होई

P.T.O.

अथवा

मैया मैं नहीं माखन खायौ।
ख्याल परे ये सखा सबै मिलि, मेरै मुख लपटायो।
देखि तुहीं सीं कै पर भाजन, ऊँचे धरि लटकायो।
हौ जु कहत नान्हे कर आपनै मै कैसे करि पायो।।
मुख दधि पोछि, बुद्धि इक कीन्ही दोना, पीठि दरायों।

(ख) नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहि काल।
अली, कली ही सौ बंध्यो, आगे कौन हवाल
भूषन-भारु संभारिहै क्यों इहिं तन सुकुमार
सूधे पाई न घर परै सोभा हीं के भार।

अथवा

जी, माल देखिए दाम बताऊँगा
बेकाम नहीं है, काम बताऊंगा
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने
कछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने
यह गीत, सख्त सर-दर्द भुलाएगा
यह गीत पिया को पास बुलाएगा

(ग) जीवन में वह था एक कुसुम
थे, उसपर नित्य निछावर तुम
वह सूख गया तो सूख गया
मधुबन की छाती को देखो
सूखी कितनी इनकी कलियाँ
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ
जो मुरझाई फिर कहाँ खिलीं

अथवा

लो यह लतिका भी भर लाई
मधु मुकुल नवल रस गागरी
अधरों में राग अमंद पिये,
अलकों में मलयज बंद किये -
तू अब तक सोई है आली
आँखों में भरे विहाग री।

2. कबीर की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

तुलसीदास की समन्वयवादी भावना पर प्रकाश डालिए।

3. बिहारी की शृंगार भावना का निरूपण कीजिए। (15)

अथवा

'बीती विभावरी' का प्रतिपादय लिखिए।

4. 'जो बीत गयी सो बात गई' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए। (15)

अथवा

नागार्जुन के कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(i) सूरदास की वात्सल्य भावना

(ii) हरिवंशराय बच्चन का साहित्यिक परिचय

(iii) 'रईसों के सपूत' कविता की मूल संवेदना

(iv) 'गीत फरोश' कविता का उद्देश्य